ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-4* July -2018
Anthology : The Research

सोशल रिसर्च फाउण्डेशन : एक संक्षिप्त परिचय

बचपन से ही अपने बड़े नाना 'सर बोर्लाग' पुरस्कार प्राप्तकर्ता विश्वविख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ0 मनोदत्त पाठक (पूर्व निदेशक, इण्टरनेशनल राइस रिसर्च इन्स्टीट्यूट, मनीला एवं पूर्व महानिदेशक, उ0 प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद, उ0प्र0), पिता श्री बृजेन्द्र मिश्रा (पूर्व सचिव–सेंटर फार वेस्ट एवं मार्जिनल लैण्ड), अपनी गुरू डॉ0 आशा त्रिपाठी (पूर्व प्राचार्य–महिला महाविद्यालय, कानपुर) और अपने नाना स्व0 श्री राम किशोर त्रिपाठी (कानपुर में टाइप राइटर पर थीसिस टाइपिंग में महारथी) के सानिध्य में रहकर 'शोध' जैसे मेरी आत्मा का एक हिस्सा बन चुका था, और उस पर भी सोने पर सुहागा यह कि युवावस्था में जीविका के रूप में प्रकाशन कार्य अपनाकर मुझे कानपुर शहर के तमाम स्नातक और परास्नातक महाविद्यालयों में आयोजित संगोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी और शोध के अन्यान्य रूप को समझने और सीखने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

परन्तु मस्तिष्क में एक इच्छा बलवती हो रही थी कि क्यों न एक ऐसा मंच बने जहाँ महाविद्यालय से जुड़े लोगों के साथ–साथ समाज का अन्य जिज्ञासु प्रबुद्ध वर्ग भी शोध पर चर्चा कर सकें और अपने शोधपत्रों....लेखों के माध्यम से राष्ट्र और समाज को शोध में एक नई दिशा प्रदान कर सके। जब मैंने अपने इस स्वप्न की चर्चा अपने गुरुजनों के समक्ष रखी तब सभी ने इस सोच को हाथोहाथ लिया और मुझे इस दिशा में सकारात्मक कार्यवाही करने तथा अपने भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। तत्पश्चात डॉ0 मनोदत्त पाठक, डॉ0 आशा त्रिपाठी, श्री बृजेन्द्र मिश्रा, श्रीमती नन्दिनी उपाध्याय, श्री कैलाश अग्निहोत्री, श्रीमती दीप्ति मिश्रा, श्रीमती बिन्दु पाण्डेय एवं श्रीमती रेनू मिश्रा के सहयोग एवं उत्साहवर्द्धन से हमने सन् 2010 में एक संस्था के गठन की कार्यवाही शुरू की और बहुत सोच–विचार कर संस्था का नाम 'सोशल रिसर्च फाउण्डेशन' रखा जिसका विशुद्ध उद्देश्य शोधपरक शिक्षण और जागरुकता फैलाना ही हो। इसके साथ ही साथ मेरे सम्पादन में पहला रिसर्च जर्नल 'एशियन रेजोनेन्स' (पूर्व नाम रेजोनेन्स) के नाम से सरकार को पंजीयन के लिये भेजा गया। भाग्यवश 'एशियन रेजोनेन्स' का पंजीयन जुलाई 2010 से आ गया और 'सोशल रिसर्च फाउण्डेशन' का पंजीयन जनवरी, 2011 से मिला, इस प्रकार पहले हमारा जर्नल प्रकाशन शुरू हुआ और संस्था की औपचारिक शुरूआत छह माह बाद जनवरी, 2011 से हुई। आपके संज्ञान में यह भी सहर्ष लाना चाहूँगा कि जब सोशल रिसर्च फाउण्डेशन की शुरूआत हमने कानपुर में की थी तब इस देश में ऐसी या इससे मिलते–जुलते नाम की एक भी संस्था पंजीकृत नहीं थी परन्तु आज की तारीख में लगभग 10 संस्थायें मिलते–जुलते नामों से शुरू की गई है और एक संस्था तो बिल्कुल इसी नाम से अन्य प्रदेश में चलाई जा रही है। हम इसे भी अपने उत्साहवर्द्धन और सफलता के रूप में देखते हैं।

चूँकि पहला जर्नल 'एशियन रेजोनेन्स' का अंग्रजी माध्यम में प्रकाशित हो रहा था अतः हमारी गुणवत्ता और विश्वसनीयता को देखकर तमाम शोधार्थी वर्ग ने हमसे एक जर्नल अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में प्रकाशित करने का आग्रह किया। अतः फरवरी, 2011 में हमने दूसरी शोध पत्रिका 'पीरियोडिक रिसर्च' (हिन्दी एवं अंग्रेजी) का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया। संस्थान द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिकाओं और शोधार्थियों को उपलब्ध कराये गये इस मंच की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सन् 2013 में हमें बढ़ती हुयी शोधपत्रों की संख्या की वजह से दो नई मासिक शोध पत्रिकाएं क्रमशः श्रृंखला और रिमार्किंग का प्रकाशन प्रारम्भ करना पड़ा। इसी क्रम में सन् 2016 से संस्थान ने 2 नई मासिक शोध पत्रिकाएं 'इन्नोवेशन' व 'एन्थोलॉजी' का प्रकाशन प्रारम्भ किया और इस प्रकार वर्तमान में संस्थान 6 अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं का सफलता पूर्वक अनवरत रूप से प्रकाशन कर रहा है। यह भी संज्ञान में लाना चाहते है कि इन 6 पत्रिकाओं को हमने दो–दो पत्रिकाओं के गुणवत्तापरक वर्ग

में बांटा है जिसमें से त्रैमासिक पत्रिकाएं 'एशियन रेजोनेन्स' और 'पीरियोडिक रिसर्च' दो बार संपादक मण्डल के परीक्षणोपरांत (Double Blind Peer Review Process) केवल सांख्यकीय (Data base) शोध पत्र ही प्रकाशित होते हैं। दूसरे वर्ग में मासिक 'श्रृंखला' और 'रिमार्किंग' को रखा गया है इनमें शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। इसी प्रकार तृतीय वर्ग में 'इन्नोवेशन' और 'एन्थोलॉजी को रखा गया है जिनमें शोध पत्र के साथ–साथ शोध लेख भी प्रकाशित किये जा रहे हैं। आपको यह भी बताते हुये हर्ष हो रहा है कि हमारी चार शोध पत्रिकाएं क्रमशः एशियन रेजोनेन्स, पीरियोडिक रिसर्च, श्रृंखला और रिमार्किंग विश्व के लगभग 21000 शोध पत्रिकाओं के मध्य स्थान रखती है और यह दो संस्थाएं क्रमशः साइंटिफिक जर्नल इम्पैक्ट फैक्टर, मोरक्को व ग्लोबल इम्पैक्ट फैक्टर, आस्ट्रेलिया द्वारा सूचीबद्ध (Indexed) की गई है। साथ ही यह पत्रिकाएं गूगल स्कॉलर और यूनेस्को द्वारा सम्बद्ध कोष (डायरेक्टरी ऑफ ओपेन एसस स्कॉलरली रिर्सोसेज) में भी सूचीबद्ध है। हमारे लिये यह भी गर्व का विषय है कि हमारी एक पत्रिका एशियन रेजोनेन्स को सीएसआईआर और नेशनल साइंस लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित डायरेक्टरी में सम्पादकीय पृष्ठों में स्थान दिया गया है और अब तक देश के लगभग 50000 से ज्यादा शिक्षक और शोधार्थी अपने 8 से 10 हजार शोध पत्र के प्रकाशन द्वारा सोशल रिसर्च फाउण्डेशन से जुड़ चुके हैं। इसके साथ ही साथ लेखन कार्य को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से एक साप्ताहिक समाचार पत्र ''स्वैच्छिक दुनिया'' का प्रकाशन भी सन् 2014 से अनवरत रूप से किया जा रहा है। इतना ही नहीं संस्थान ने अब तक सम्पूर्ण देश के विभिन्न महाविद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की लगभग 30 पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है।

संस्थान प्रकाशन के साथ ही साथ साहित्यिक और सामाजिक गतिविधियों के प्रति भी प्रतिबद्ध है और हम इस हेतु विभिन्न प्रकोष्ठ जैसे 'अभिव्यक्ति मंच', 'निःशुल्क विधिक सहायता केन्द्र', 'सेन्टर फार रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट इन हायर एजूकेशन' भी संचालित कर रहे हैं। इन प्रकोष्ठों के माध्यम से हमने गत वर्षों में 'गुरू वंदन–छात्र अभिनन्दन', 'पौध रोपण', काव्य–गोष्ठियों तथा एक संगोष्ठी 'कलम की क्रान्ति व गांधी जी के स्वच्छ अहिंसक समाज का निर्माण', गत वर्ष 9 अप्रैल, 2017 को एक राष्ट्रीय सेमिनार और 31 दिसम्बर, 2017 को ग्वालियर में सेमिनार जैसे कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक आयोजित किये हैं। आज का यह सेमिनार भी आपके समक्ष इसी सद्इच्छा की ही एक अगली कड़ी है।

हमारे और कानपुर के लिये यह भी गौरव का विषय है कि हाल ही में 2 मई, 2018 को यूजीसी ने देश के 4305 जर्नल्स को अपनी सूची से बाहर किया..... इसके बावजूद भी हमारी संस्था के चार जर्नल्स क्रमशः एशियन रेजोनेन्स, पीरियोडिक रिसर्च, रिमार्किंग एवं श्रृंखला अभी भी सूचीबद्ध हैं।

हमारे लिये यह भी एक गर्व की बात है कि 2011 से पंजीकृत इस संस्थान ने अपने संचालन के इन वर्षों में कभी सरकार से कोई अनुदान प्राप्त नहीं किया है और अपने प्रबुद्ध व गुणी प्रबन्धक कर्मचारियों के बल पर लगातार सफलता के नये आयाम प्राप्त कर रहा है। संस्थान अपने उच्च शिक्षा के गुणात्मक उद्देश्य के साथ कार्य रहा है और नित्य प्रति यही चाहता है कि शोध किताबों की सीमा से बाहर निकल समाजोपरक बने ताकि यदि एक भी शोध समाजहित में निकल कर विश्वपटल पर पहुँच गया तो राष्ट्रहित का संस्थान का सपना अवश्य साकार हो सकेगा।

(डॉ0 राजीव मिश्रा)
सचिव

From the Desk of Editor-in-Chief....

We take opportunity to introduce ourselves as a non-political, non-government, social organisation working for upgrading quality of higher education particularly in the field of research. To achieve this objective our organisation has established a Research Cell named "Centre for Research and Development in Higher Education" and has been publishing six international journals viz. **Asian Resonance, Periodic Research, Shrinkhala, Remarking, Innovation & Anthology** and one weekly news paper **"Swaichhik Duniya"** regularly under its patronage and able guidance of Board of Directors and reviewer's team.

The founder Chairman Dr. M.D. Pathak and Secretary Dr. Rajeev Misra take keen interest in the growth of the organisation. This organisation began with publication of its first journal "Asian Resonance" in 2010. Now organisation is progressing by leaps and bounds under the dynamic supervision of Chairman & Secretary and co-operation of Treasurer Smt. Deepti Mishra, Managers Ms. Bhawana Nigam, Ms. Namrata Singh and Ms. Rashmi Srivastava with all office bearers.

Apart from this our organisation arranges exchange of views between intellectuals through seminars and conferences. In this chain our orgnaisation is going to organise one day International Seminar on "**Writing Quality Research Paper of International Standard**" on 8th July, 2018 at Agrasen Bhawan, Kidwai Nagar, Kanpur.

The seminar will be inaugurated by our Chief Guest Dr. Neelima Gupta, Vice-Chancellor, CSJM University, Kanpur, Guest of Honour Dr. Vandana Asthana, Professor-Eastern Washington University, Cheney, WA and Special Guest Mr. Pankaj Kumar Singh, Deputy Commissioner, Hon'ble Supreme Court. Seminar will be presided by Dr. Sushma Yadav, Vice-Chancellor, BPS Women University, Khanpur Kalan, Haryana and Member- UGC & Press Council of India, Dr. N.K. Saxena, Ex Principal, P.P.N. College, Kanpur will deliver the Key-note address. Resource persons and delegates from different states viz Maharashtra, West Bengal, Uttarakhand, Haryana, Madhya Pradesh, Rajasthan and Delhi will participate and enrich the Seminar.

The topic of the seminar is very useful for research scholars as well as teachers for improving writing of good research paper. We hope that discussions will give very fruitful results.

We are extremely happy to introduce you this Seminar Edition of our journal with a sense of satisfaction. In the way the academic community has shown keen interest to contribute the journal to enhance the production of knowledge in higher education is appreciable. I would like to express my sincere gratitude to all those who have contributed to this volume.

We congratulate the intellectuals going to be honored by our organization for their cooperation and contribution in the field of higher education. We wish them successful long life.

We hope that the seminar with its overwhelming number of participants from all over the country shall add a new chapter in the academic history of Social Research Foundation.

Thanks,

(**Dr. Asha Tripathi)**
Ex-Principal
Mahila Mahavidyalaya PG College
Kanpur

Introduction of the Topic

Honourable dignitaries and friends, with the kind permission of our chairperson, I would like to present a brief introduction of the topic of today's seminar.

Today we all have gathered here to discuss about a very important topic "How to write a quality research paper of international standard".

Infact, research is an act of studying something carefully and extensively in order to attain deep knowledge in the same. More over research is not only a process that is limited to the field of education. It can, as well, cater to people from business, politics etc.

It is the research work that adds to the information base of a country. Various institutions, organisation and industries can use this to take forward a nation educationally, politically, economically or for general all over development.

Unfortunately, research standard in India when compared with international standards, seems to have a long way to go. Most of the India's researches are only empirical while in the new approach of research one is supposed to look at both theoretical and empirical aspects alongwith case studies.

Most of the research scholars find that writing a research paper is the toughest challenges they face. But by learning what these challenges are, they will be more prepared and more confident in finishing their research paper. Most importantly, they will be able to avoid committing common mistakes. The overall picture of the problems identified in the various aspects of the research paper shows that the most outstanding weak aspects in writing a research paper include-unsatisfactory sampling procedure, stating of hypotheses that could not be tested, using inappropriate methodology and inadequate literature review.

Recently cases of plagiarism have also been identified in academic field. Copying the original paper is not only a matter of disgrace but it is a total violation of the copy right act. Also, it is against the code of conduct of the research scholars to follow.

बेशक, शोध पत्र लेखन का कोई जादुई फार्मूला नहीं है। हाँ गुणात्मक शोध पत्र के कुछ बेंच मार्क्स हैं जिनके आधार पर शोधार्थी अपने शोध पत्र की क्वालिटी की जांच कर सकते हैं।

1. Does the paper add what is already known?
2. In the research paper demonstrably related to what has been previously written.
3. Are the arguments employed in the term of the body of knowledge. \
4. Is the research paper easy to read?
5. Do the arguments flow logically?
6. Are the conclusions strong?

Unfortunately, learning basic research skills is something that is almost lost in many educational systems. No doubt, internet is a valuable tool but it is not the only research skill.

सम्भवतः यू0जी0 और पी0जी0 स्तर पर सभी विषयों में रिसर्च मेथोडोलॉजी का एक कम्पलसरी पेपर होता है जिसमें शोध के बेसिक स्टेप बताये जाते हैं जैसे–

1. Title, Abstract and Introduction.
2. Review of Literature.
3. Significance and Scope of the Study.
4. Research Methods.
5. Objectives and Hypotheses.
6. Use of Tables and Figures.
7. Results and Discussion.
8. How to avoid Plagiarism
9. Publication and Execution.

लेकिन इन बेसिक्स को न तो टीचर सिंसियरली बताते हैं और न स्टूडेन्ट्स इन पर सिंसरली ध्यान देते हैं। स्टूडेन्ट्स इस पेपर को केवल इक्जाम में पास होने के उद्देश्य से पढ़ते है भविष्य में उपयोग के उद्देश्य से नहीं।

No doubt, our country does have a pool of very talented researchers. There is a need to motivate faculty members and research scholars to work on research papers.

This seminar is an attempt to focus upon skills of research paper writing. We hope that the distinguished scholars participating in the seminar will reflect on the various aspects related to the topic of the seminar and the valuable discussions will be very usefull for research scholars as well as teachers.

We are extremely hopeful that this seminar is going to be a great success and we request for your support in making it a memorable and successful event.

Thank you.

(Dr. Saroj Rathore)
Ex- HOD, Psychology
Mahila Mahavidyalaya
Kanpur

International Seminar
Research Paper Writing
8th July, 2018

Program

Inaugural Session 10.00 am to 12.30 pm

Lighting of the Lamp & Saraswati Vandana

Welcome of the Guests

Report

Introduction of the Subject

Address by The Chief Guest

Release of Journal and Books

Honour of the Respected Intellectuals

Key-note Address

Address by Resource Person

Presidential Address

Vote of Thanks

1st Academic Session 1.00-2:30 pm

Honour of Guests

Welcome Address

Address by Main Speaker

Address by Special Guests

Address by Chair person

LUNCH BREAK 2:30 - 3:30

2nd Academic Session 3:30-5:30 pm

Honour of Guest on Dias

Welcome Address

Address by Main Speaker

Presentation of Paper

Address by Chair-person

Vote of thanks

Departing Tea 5:30 PM

Organizing Committees

Patrons	Convener
Dr. M. D. Pathak Mr. B. K. Mishra	Dr. Asha Tripathi Dr. Rajeev Misra
Advisory Board Dr. N.K. Saxena Dr. Prabhat Kumar Bajpai Dr. Saroj Rathaur Smt Nandini Upadhya	**Anchoring Committee** Mrs. Kumud Srivastava Dr. Surendra Gupta 'Sikar' Dr. Jyoti Kiran Dr. Narayani Shukla
Registration Committee Dr. Ajit Singh Rathaur Ms. Rashmi Srivastava Mr. Manish Sharma Dr. Raj Kumar Tripathi	**Stage Arrangement Committee** Ms. Bhawana Nigam Ms. Princi Singh Ms. Rashmi Kulshrestha Ms. Poonam Rathore
Welcome Committee Dr. Anurag Singh Ms. Deepti Mishra Ms. Namrata Singh Ms. Sheetal Bajpai Dr. Shakti Dixit	**Press / Media Committee** Dr. Neeta Agnihotri Mr. Atul Dixit Mr. Ashish Awasthi Mr. Sunil Sahu Mr. Chandan Jaiswal
PPT Arrangement Committee Mr. Sumit Nagia Dr. A.K.Dixit Mr. Yogesh Pandey	**Co-ordination Committee** Dr. Nalin Srivastava Dr. Shipra Srivastava Dr. Manju Lata Kashyap Dr. Shalini Agarwal Dr. Gyanprabha Agarwal
Lodging Arrangement Committee Mr. Vinod Pandey Mr. Vijay Shukla Mr. Arjun Shukla	**Refreshment and Lunch Committee** Mr. Ramesh Mishra Mr. Satish Pandey Mr. Dhirendra Srivastava Mr. Ganesh Mishra
General Supervision Dr. Pappi Mishra Dr. Asha Verma Dr. Alka Katiyar Dr. Shashi Rani Awasthi	**Administration Committee** Mr. Om Prakash Shukla Mr. Diwakar Mishra Mr. Sanjay Katiyar Mr. D.K.Maithani